

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 7-04-2026

विषय सूची

अंतरसंबद्ध विश्व हेतु वन हेल्थ दृष्टिकोण
भारत द्वारा परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में उपलब्धि हासिल
भारत में डीप टेक
संक्षिप्त समाचार
लेह में पिपरहवा अवशेष
नमो ड्रोन दीदी योजना
आरबीआई द्वारा बैंकिंग संवाददाता वर्गीकरण में संशोधन
बाबू जगजीवन राम

अंतरसंबद्ध विश्व हेतु वन हेल्थ दृष्टिकोण

एकीकृत विश्व हेतु वन हेल्थ दृष्टिकोण

संदर्भ

- जूनोटिक रोगों और एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR) की बढ़ती घटनाओं ने मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य जोखिमों से निपटने के लिए एक समन्वित वन हेल्थ दृष्टिकोण की आवश्यकता को उजागर किया है।

वन हेल्थ दृष्टिकोण क्या है?

- वन हेल्थ एकीकृत और एकीकृत करने वाला दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य लोगों, पशुओं एवं पारिस्थितिक तंत्रों के स्वास्थ्य को स्थायी रूप से संतुलित और अनुकूलित करना है।
- यह मान्यता देता है कि मनुष्यों, घरेलू और जंगली पशुओं, पौधों तथा व्यापक पर्यावरण (जिसमें पारिस्थितिक तंत्र शामिल हैं) का स्वास्थ्य आपस में गहराई से जुड़ा तथा परस्पर निर्भर है।



वन हेल्थ अवधारणा का विकास

- यह अवधारणा 2003-04 में गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम (SARS) के प्रकोप के दौरान प्रमुखता से उभरी।
 - एवियन इन्फ्लुएंजा H5N1 के प्रसार के दौरान इसे और सुदृढ़ किया गया।
- मैनहट्टन सिद्धांतों ने औपचारिक रूप से मानव और पशु स्वास्थ्य के बीच संबंधों तथा उनके वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं खाद्य सुरक्षा पर प्रभावों को मान्यता दी।
- वैज्ञानिक प्रमाणों ने समय के साथ दिखाया कि:
 - लगभग 75% उभरते संक्रामक रोग जूनोटिक हैं।

- भूमि उपयोग परिवर्तन, शहरीकरण और वैश्विक व्यापार जैसे मानवजनित कारक रोगों के उद्भव को बढ़ावा देते हैं।

वन हेल्थ दृष्टिकोण का महत्व

- **बढ़ते जूनोटिक रोग:** उभरते रोगजनकों का बड़ा हिस्सा पशुओं से उत्पन्न होता है और मनुष्यों में फैलता है। वन्यजीव आवासों में मानव अतिक्रमण ने इन जोखिमों को और बढ़ा दिया है।
- **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:** जलवायु परिवर्तन पारिस्थितिक तंत्र, वाहक वितरण और रोग संचरण पैटर्न को बदल रहा है। चरम मौसम घटनाएँ पहले से ही संवेदनशील स्वास्थ्य प्रणालियों की कमजोरियों को बढ़ा रही हैं।
- **एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR):** मनुष्यों, पशुधन और कृषि में एंटीबायोटिक का अंधाधुंध उपयोग AMR को तीव्र कर रहा है। इस वैश्विक खतरे से निपटने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय रणनीति आवश्यक है।
- **स्वास्थ्य जोखिमों का वैश्वीकरण:** लोगों और वस्तुओं की बढ़ती गतिशीलता ने रोगों के तीव्र सीमा-पार प्रसार को सक्षम बनाया है। स्वास्थ्य सुरक्षा अब वैश्विक सामूहिक कार्यवाई का विषय बन गई है।

वन हेल्थ को सुदृढ़ करने वाली वैश्विक पहलें

- **चतुष्क सहयोग (Quadripartite Collaboration):** इसमें शामिल हैं –
 - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
 - खाद्य और कृषि संगठन (FAO)
 - संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)
 - विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH)
- **वन हेल्थ संयुक्त कार्य योजना (2022):** इसका उद्देश्य देशों में निगरानी और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को सुदृढ़ करना है। यह जूनोटिक रोगों एवं AMR से समन्वित तरीके से निपटने पर केंद्रित है।
- **WHO महामारी समझौता:** इसका उद्देश्य देशों के बीच टीकों और उपचारों तक समान पहुंच सुनिश्चित करना है। यह वैश्विक स्तर पर रोगजनक डेटा-साझाकरण तंत्र स्थापित करने का भी प्रयास करता है।

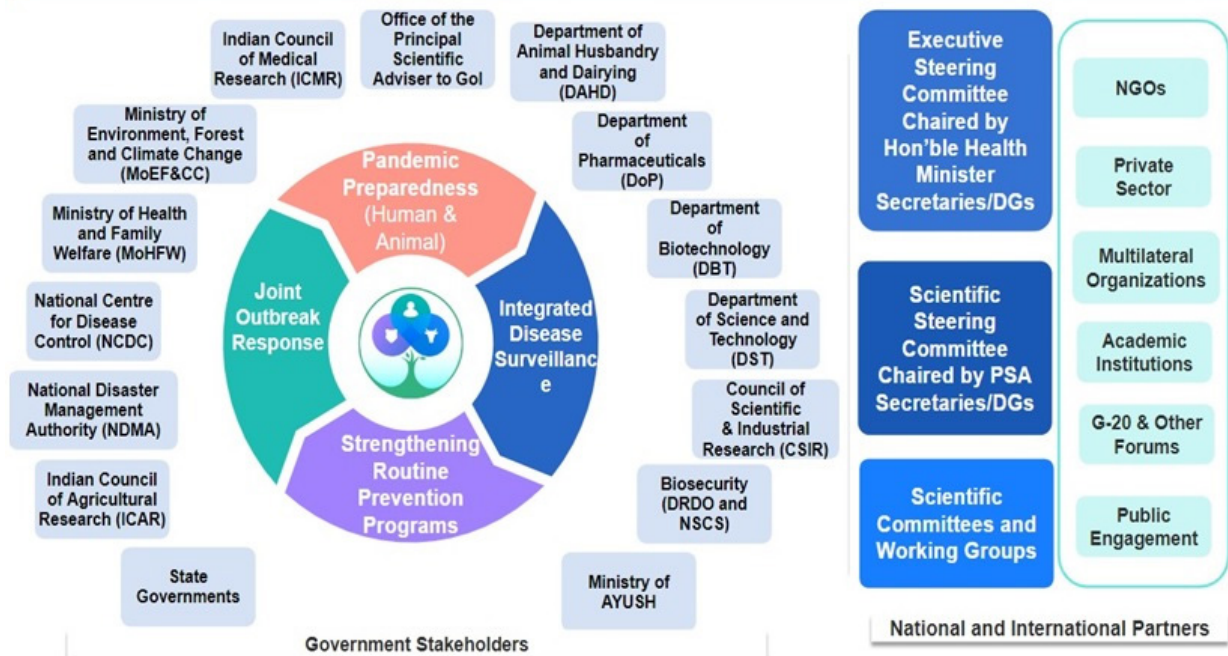
राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन

- **प्रारंभ:** प्रधानमंत्री विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सलाहकार परिषद (PM-STIAC) ने 2022 में एक राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन स्थापित करने को स्वीकृति प्रदान दी।
- **उद्देश्य:** जूनोटिक रोगों, AMR और उभरते स्वास्थ्य खतरों की निगरानी, रोकथाम और नियंत्रण हेतु एकीकृत ढाँचा विकसित करना।
- **दृष्टिकोण:** स्वास्थ्य, पशुपालन, कृषि, पर्यावरण आदि

मंत्रालयों, अनुसंधान संस्थानों और राज्य सरकारों के बीच बहु-क्षेत्रीय सहयोग।

- **मुख्य क्षेत्र:**
 - जूनोटिक रोग (जैसे निपाह, एवियन इन्फ्लुएंजा, COVID-19 की उत्पत्ति)।
 - खाद्य सुरक्षा और AMR।
 - जलवायु परिवर्तन और रोग प्रसार पर उसका प्रभाव।
 - प्रयोगशालाओं और डेटा एकीकरण प्लेटफॉर्म के लिए क्षमता निर्माण।

Stakeholders of the One Health Mission



वन हेल्थ को लागू करने में चुनौतियाँ

- **अंतर-क्षेत्रीय समन्वय:** मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य संस्थाओं के बीच विखंडित संस्थागत ढाँचे।
- **प्रशिक्षित कार्यबल की कमी:** जिला स्तर पर महामारी विशेषज्ञों, जूनोटिक रोग विशेषज्ञों और डेटा वैज्ञानिकों की कमी।
- **संरचनात्मक असमानताएँ:** राज्यों में निगरानी क्षमताओं और डिजिटल स्वास्थ्य एकीकरण में भिन्नता।
- **डेटा गोपनीयता और साझाकरण:** क्षेत्रों के बीच सुरक्षित और प्रभावी वास्तविक समय डेटा प्रवाह सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण है।

आगे की राह

- एकीकृत और वास्तविक समय निगरानी प्रणालियों को सुदृढ़ किया जाना चाहिए ताकि उभरते स्वास्थ्य खतरों का शीघ्र पता लगाया जा सके तथा समय पर प्रतिक्रिया दी जा सके।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ किया जाना चाहिए ताकि देशों के बीच टीकों, निदान और उपचारों तक समान पहुंच सुनिश्चित हो सके।
- क्षमता निर्माण और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि निवारक और लचीली स्वास्थ्य प्रणालियाँ सुदृढ़ हो सकें।

स्रोत: TH

भारत द्वारा परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में उपलब्धि हासिल

संदर्भ

- भारत ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है क्योंकि कलपक्कम में स्वदेशी रूप से निर्मित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR) ने क्रिटिकलिटी प्राप्त कर ली है।

प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR)

- PFBR एक उन्नत रिएक्टर है जो जितना विखंडनीय ईंधन (fissile fuel) उपभोग करता है उससे अधिक उत्पन्न करता है।
- भारत का PFBR कलपक्कम में स्थित है और इसका संचालन भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड (BHAVINI) द्वारा किया जाता है।
- यह यूरेनियम-प्लूटोनियम मिश्रित ऑक्साइड (MOX) ईंधन का उपयोग करता है।
- इसे फास्ट ब्रीडर कहा जाता है क्योंकि:
 - यह मानक रिएक्टरों में प्रयुक्त धीमे थर्मल न्यूट्रॉनों के बजाय उच्च-ऊर्जा, तीव्र न्यूट्रॉनों का उपयोग करता है।
 - यह उपजाऊ पदार्थ (जैसे यूरेनियम-238) को विखंडनीय पदार्थ (प्लूटोनियम-239) में परिवर्तित करता है।

- क्रिटिकलिटी उस अवस्था को कहते हैं जब रिएक्टर एक आत्म-निर्भर नाभिकीय विखंडन प्रतिक्रिया प्राप्त कर लेता है, जहाँ उत्पन्न न्यूट्रॉनों की संख्या प्रतिक्रिया को बाहरी हस्तक्षेप के बिना जारी रखने के लिए पर्याप्त होती है।

उपलब्धि का महत्व

- **भारत के त्रि-चरणीय परमाणु कार्यक्रम की प्रगति:** PFBR भारत के तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम के दूसरे चरण में प्रगति का प्रतीक है।
 - यह उपजाऊ पदार्थ को विखंडनीय ईंधन में परिवर्तित करने में सक्षम बनाता है।
 - यह तीसरे चरण की नींव रखता है, जो थोरियम के उपयोग पर केंद्रित है।
- **थोरियम क्षमता का दोहन:** भारत के पास विशाल थोरियम भंडार है, और PFBR थोरियम-आधारित रिएक्टरों के लिए आवश्यक विखंडनीय पदार्थ (U-233) उत्पन्न करने में मदद करता है।
 - थोरियम-232 स्वयं विखंडनीय नहीं है, लेकिन इसे विखंडनीय पदार्थ में परिवर्तित किया जा सकता है।
- **प्रौद्योगिकीय और सामरिक महत्व:** भारत रूस के बाद केवल दूसरा देश बन गया है जिसने वाणिज्यिक फास्ट ब्रीडर रिएक्टर विकसित किया है।
 - यह परमाणु प्रौद्योगिकी और अभियंत्रण में उन्नत स्वदेशी क्षमता को प्रदर्शित करता है।

भारत का त्रि-चरणीय परमाणु कार्यक्रम

- **स्थापना:** भारत ने 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की।
 - 1956 में एशिया का प्रथम अनुसंधान रिएक्टर “अप्सरा” भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC), ट्रॉम्बे में चालू किया गया।
 - 1969 में भारत एशिया का दूसरा देश बना जिसने तारापुर में परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया (जापान के बाद और चीन से बहुत पहले)।
- भारत का तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम डॉ. होमी जे. भाभा द्वारा परिकल्पित किया गया था।
- **प्रथम चरण (प्रेशराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर - PHWRs):** इस चरण में प्राकृतिक यूरेनियम (U-238) का उपयोग किया गया, जिसमें थोड़ी मात्रा में U-235 विखंडनीय पदार्थ होता है।
 - भारी जल (ड्यूटेरियम ऑक्साइड) को मॉडरेटर और कूलेंट दोनों के रूप में प्रयोग किया गया।
 - इस चरण का मुख्य उद्देश्य यूरेनियम ईंधन से उप-उत्पाद के रूप में प्लूटोनियम-239 का उत्पादन करना था।
 - प्लूटोनियम-239 एक विखंडनीय पदार्थ है जिसका उपयोग परमाणु रिएक्टरों में ईंधन के रूप में किया जाता है।

- **द्वितीय चरण (फास्ट ब्रीडर रिएक्टर - FBRs):** इस चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों का उपयोग किया जाता है।
 - ये रिएक्टर तीव्र न्यूट्रॉन स्पेक्ट्रम का उपयोग करके उपभोग से अधिक विखंडनीय पदार्थ उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।
 - इस चरण में प्रथम चरण में उत्पन्न प्लूटोनियम-239 को ईंधन के रूप में U-238 के साथ प्रयोग किया जाता है ताकि ऊर्जा, U-233 और अधिक Pu-239 उत्पन्न किया जा सके।
 - यूरेनियम-233 भी एक विखंडनीय पदार्थ है जिसका उपयोग परमाणु रिएक्टरों में ईंधन के रूप में किया जा सकता है।
- **तृतीय चरण (एडवांस्ड हेवी वाटर रिएक्टर - AHWRs):** अंतिम चरण में एडवांस्ड हेवी वाटर रिएक्टरों का उपयोग किया जाता है।
 - Pu-239 को थोरियम-232 (Th-232) के साथ संयोजित किया जाएगा ताकि ऊर्जा और U-233 उत्पन्न किया जा सके।
 - थोरियम भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और यह चरण इसे परमाणु ईंधन के रूप में उपयोग करने की क्षमता को दोहन करने का लक्ष्य रखता है।

India's 3-Stage Path to Nuclear Energy Security

THE FOUNDATION: RESOURCES & PRINCIPLES

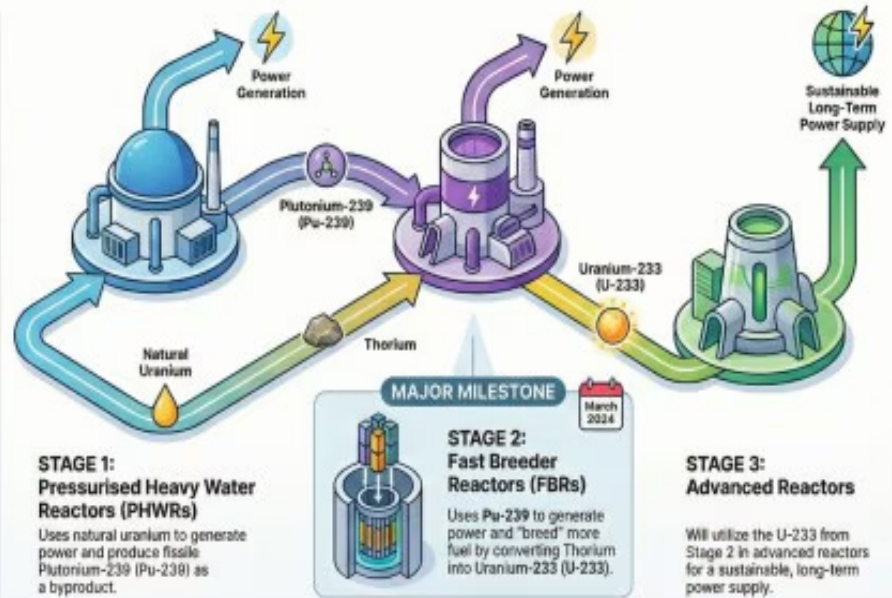


25%
of World's
Thorium
Reserves

India's program is designed to ultimately use its vast thorium deposits as nuclear fuel.



The process converts non-fissionable "fertile" materials (Thorium) into fissionable "fissile" materials (Uranium-233).



© NotebookLM

स्रोत: PIB

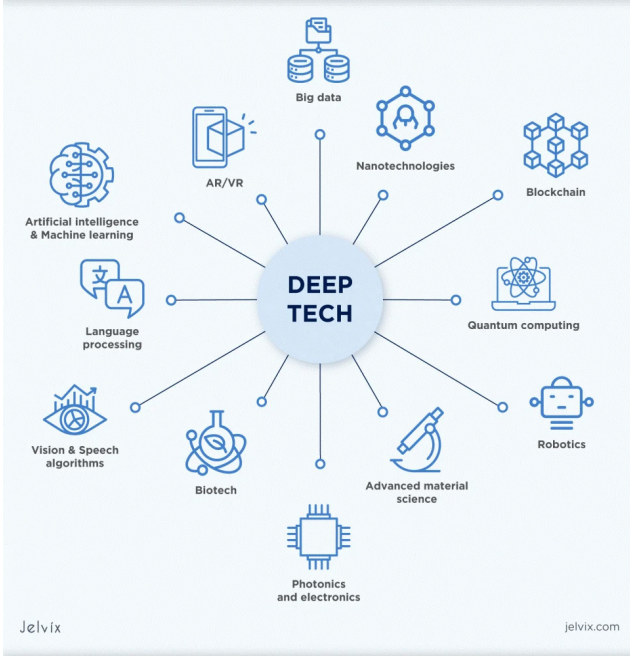
भारत में डीप टेक

संदर्भ

- भारत सरकार ने डीप टेक (Deep Tech) को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न उपाय किए हैं, जिनमें नीतिगत पहल भी शामिल है।

डीप टेक

- डीप टेक उन नवाचारों को संदर्भित करती है जो उन्नत वैज्ञानिक और तकनीकी खोजों पर आधारित होते हैं।



- वर्तमान में भारत में 3600 से अधिक डीप टेक स्टार्टअप हैं, जिनमें से 480 से अधिक केवल वर्ष 2023 में स्थापित हुए।

भारत की डीप टेक महत्वाकांक्षाओं का महत्व

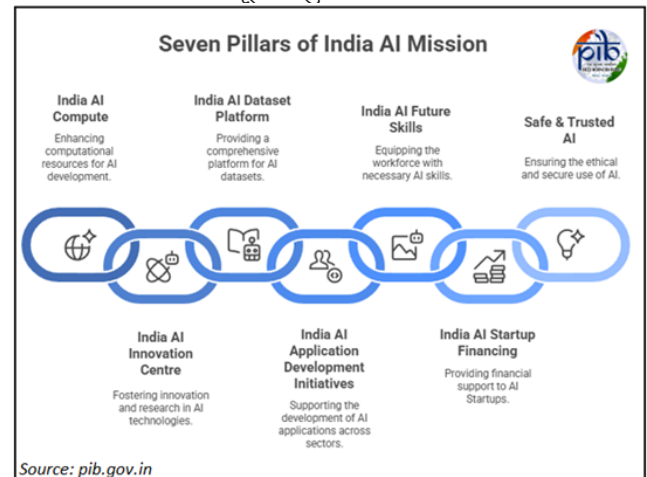
- **वैश्विक नेतृत्व:** यह भारत को वैश्विक परिदृश्य में एक विश्वसनीय अनुसंधान एवं विकास केंद्र के रूप में स्थापित करता है, जहाँ विशाल STEM प्रतिभा का उपयोग अग्रणी प्रौद्योगिकियों में किया जा सकता है।
- **प्रौद्योगिकीय संप्रभुता:** राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा और अंतरिक्ष के लिए विदेशी आयात पर निर्भरता कम करता है, जिससे भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के प्रति संवेदनशील नहीं रहता।
- **स्थानीय चुनौतियों का समाधान:** ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता, खाद्य सुरक्षा के लिए सटीक कृषि, और ऊर्जा स्वतंत्रता के लिए हरित हाइड्रोजन जैसे भारत-प्रथम समाधान सक्षम करता है।
- **आर्थिक मूल्य:** एक सुदृढ़ डीप टेक पारिस्थितिकी तंत्र भारत को वैश्विक मूल्य श्रृंखला में ऊपर ले जाता है, जिससे वह कम लागत वाली सेवाओं और असेंबली-आधारित विनिर्माण से उच्च-मूल्य अनुसंधान, डिजाइन एवं बौद्धिक संपदा निर्माण की ओर अग्रसर होता है।

चुनौतियाँ

- डीप टेक में प्रायः बड़े प्रारंभिक निवेश और लंबी विकास समयसीमा की आवश्यकता होती है, जिससे यह पारंपरिक वेंचर कैपिटल के लिए कम आकर्षक बनती है।
- विशेषीकृत प्रयोगशालाओं, सुपरकंप्यूटिंग और परीक्षण सुविधाओं तक सीमित पहुँच नवाचार को धीमा करती है।
- विशेषीकृत अनुसंधान प्रतिभा की कमी और वैश्विक समकक्षों की तुलना में अपेक्षाकृत कम उद्योग-सम्बद्ध R&D व्यय प्रगति में बाधा डालते हैं।
- डीप टेक समाधान अक्सर नियामक और अपनाने की बाधाओं का सामना करते हैं, जिससे वाणिज्यिकरण में देरी होती है।

सरकारी पहलें

- **राष्ट्रीय डीप टेक स्टार्टअप नीति (NDTSP) का मसौदा:** नवाचार को प्रोत्साहित करने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और डीप टेक अनुसंधान-आधारित नवाचारों के प्रभावी उपयोग के माध्यम से सामाजिक विकास को बढ़ावा देने हेतु तैयार किया गया।
- **IndiaAI मिशन (2024):** पाँच वर्षों में ₹10,300 करोड़ का बजट।
 - प्रमुख लक्ष्य: 18,693 GPUs के साथ उच्च-स्तरीय सामान्य कंप्यूटिंग सुविधा का निर्माण।



- **भारत के AI मॉडल और भाषा प्रौद्योगिकियाँ:** सरकार भारत के अपने आधारभूत मॉडल विकसित करने में सहायक है, जिनमें बड़े भाषा मॉडल (LLMs)

और भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप समस्या-विशिष्ट AI समाधान शामिल हैं।

- **अनुसंधान, विकास और नवाचार (RDI) योजना:** बड़े पैमाने पर नवाचार को वित्तपोषित करने हेतु ₹1 लाख करोड़ का RDI फंड घोषित।
- **भारतीय अंतरिक्ष नीति, 2023:** इसमें ISRO, IN-SPACe और उद्योग की भूमिकाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, जिससे निजी क्षेत्र की भागीदारी को सक्षम बनाया गया।
- **FDI मानदंडों का उदारीकरण:** अंतरिक्ष क्षेत्र में उपग्रह निर्माण और घटकों में 100% FDI की अनुमति, तथा प्रक्षेपण यान और उपग्रह संचालन में सीमा बढ़ाई गई।
- **अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF):** ANRF अधिनियम, 2023 के अंतर्गत स्थापित। इसका उद्देश्य उद्योग, अकादमिक जगत और सरकार के बीच रणनीतिक दिशा, प्रतिस्पर्धी वित्तपोषण अवसर एवं सहयोग मार्ग प्रदान करना है।
- **राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (2023):** 2023-24 से 2030-31 तक क्वांटम प्रौद्योगिकियों (क्वांटम कंप्यूटिंग, संचार और संवेदन) के अनुसंधान, विकास और परिनियोजन को तीव्र करना।
- **Bio-E3 नीति:** जैव-प्रौद्योगिकी उद्यमिता, जैव-निर्माण और जैव-आधारित नवाचार को बढ़ावा देने हेतु लागू।
- **AI उत्कृष्टता केंद्र:** देशभर में समर्पित AI हब और नवाचार केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं।
- **सेमिकॉन इंडिया कार्यक्रम (2021):** घरेलू सेमीकंडक्टर उद्योग को प्रोत्साहित करने हेतु शुरू किया गया।
 - **ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025:** इसमें घोषणा की गई कि भारत का प्रथम स्वदेशी सेमीकंडक्टर चिप 2025 तक उत्पादन के लिए तैयार होगा।

स्रोत: TH

संक्षिप्त समाचार

लेह में पिपरहवा अवशेष

संदर्भ

- बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर पवित्र पिपरहवा अवशेष लेह में पहुँचने वाले हैं।
 - ये अवशेष जुलाई 2025 में हांगकांग से भारत लाए गए थे।

पिपरहवा अवशेष के बारे में

- पिपरहवा अवशेष 1898 में ब्रिटिश सिविल इंजीनियर विलियम क्लैक्सटन पेपे द्वारा उत्तर प्रदेश के पिपरहवा में खोजे गए थे।
 - ये पिपरहवा स्तूप से उत्खनित किए गए, जिसे व्यापक रूप से प्राचीन कपिलवस्तु—भगवान बुद्ध का जन्मस्थान—के रूप में मान्यता प्राप्त है।
 - इनमें अस्थि-खंड, सॉपस्टोन और क्रिस्टल कलश, बलुआ पत्थर का पात्र तथा स्वर्ण आभूषण एवं रत्न जैसी भेंटें शामिल हैं।
 - इन्हें भगवान बुद्ध के पार्थिव अवशेषों से संबंधित माना जाता है।
 - एक कलश पर ब्राह्मी लिपि में अंकित शिलालेख पुष्टि करता है कि ये बुद्ध के अवशेष हैं जिन्हें शाक्य कुल द्वारा स्थापित किया गया था।
 - **स्थिति:** अधिकांश अवशेष 1899 में कोलकाता के भारतीय संग्रहालय में स्थानांतरित किए गए और 'AA' प्राचीन वस्तुओं के रूप में कानूनी रूप से संरक्षित हैं, जिनकी बिक्री या हटाना निषिद्ध है।
 - कुछ अस्थि-अवशेष सियाम के राजा को उपहार स्वरूप दिए गए, जबकि एक भाग पेपे के वंशजों के पास रहा।

भारत की बौद्ध सभ्यता का द्वार: लद्दाख

- लद्दाख ऐतिहासिक रूप से भारत, मध्य एशिया और पूर्वी एशिया के बीच सेतु के रूप में कार्य करता रहा है।

- इसने कश्मीर, गांधार और मध्य एशिया जैसे क्षेत्रों को जोड़ा।
- इन्हीं मार्गों से व्यापारिक कारवाँ, मठीय नेटवर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ।

स्रोत: IE

नमो ड्रोन दीदी योजना

संदर्भ

- नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अनुसार देश में कुल 1,094 स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों को ड्रोन पायलट के रूप में प्रशिक्षित किया गया है।

नमो ड्रोन दीदी

- नमो ड्रोन दीदी योजना एक ₹1,261 करोड़ की केंद्रीय पहल है (2023-24 से 2025-26 तक), जिसके अंतर्गत DAY-NRLM मिशन के अंतर्गत 15,000 महिला-नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को ड्रोन उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
- यह ग्रामीण महिलाओं को प्रमाणित ड्रोन पायलट के रूप में सशक्त बनाती है ताकि वे किसानों को कीटनाशक और उर्वरक के लिए सस्ती, सटीक एवं कुशल छिड़काव सेवाएँ प्रदान कर सकें, जिससे फसल उत्पादन बढ़े तथा नई आय उत्पन्न हो।
- योजना के अंतर्गत SHG सदस्यों को 15-दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है (5 दिन ड्रोन पायलट प्रशिक्षण और 10 दिन पोषक तत्व एवं कीटनाशक अनुप्रयोग प्रशिक्षण)।

स्रोत: TH

आरबीआई द्वारा बैंकिंग संवाददाता वर्गीकरण में संशोधन

संदर्भ

- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने प्रस्ताव दिया है कि बैंक शाखाओं के अतिरिक्त बैंकिंग संवाददाताओं को उनके कार्यों के आधार पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाए तथा उनके वेतन निर्धारण में समानता लाई जाए।

परिचय

- आरबीआई ने तीन प्रकार के वितरण बिंदुओं को परिभाषित करने का प्रस्ताव रखा है:
 - बैंक शाखाएँ
 - बिज़नेस कॉरिस्पॉन्डेंट-बैंकिंग आउटलेट (BC-BO)
 - बिज़नेस कॉरिस्पॉन्डेंट-बैंकिंग टचपॉइंट (BC-BT)
- बैंकिंग संवाददाता दूरदराज़ क्षेत्रों में खुदरा बैंकिंग संचालन करने के लिए नियुक्त किए जाते हैं, जिससे बैंकों की पहुँच बढ़ती है और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिलता है।
- BC-BOs गतिविधियाँ कर सकेंगे जैसे:
 - बैंक खाते खोलना
 - सावधि जमा खाते खोलना
 - नकद जमा और निकासी
 - धन हस्तांतरण
 - डेबिट कार्ड जारी करना/ब्लॉक करना आदि
- BC-BTs सीमित सेवाएँ प्रदान करेंगे जैसे छोटे मूल्य के लेन-देन और प्रेषण, साथ ही लचीले समय पर सेवाएँ।
- वर्तमान में बिज़नेस कॉरिस्पॉन्डेंट्स के बीच कोई वर्गीकरण नहीं है और उनके कमीशन बैंक से बैंक तक भिन्न होते हैं।
- वर्ष 2025 तक विभिन्न ऋणदाताओं द्वारा 16 लाख से अधिक बिज़नेस कॉरिस्पॉन्डेंट्स नियुक्त किए गए थे।

स्रोत: IE

बाबू जगजीवन राम

संदर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाबू जगजीवन राम की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

परिचय

- बाबू जगजीवन राम स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक सुधारक थे, जिनका जन्म 5 अप्रैल 1908 को चंदवा गाँव (वर्तमान बिहार) में हुआ।

- उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक किया।
- **स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:** वे महात्मा गांधी से प्रेरित होकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए।
 - उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।
- **सामाजिक न्याय में योगदान:** उन्होंने अखिल भारतीय रैदास महासभा और ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लासेज लीग की स्थापना की, ताकि वंचित समुदायों को संगठित किया जा सके।
 - वे 1955 में नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले थे।
- **राजनीतिक करियर:** वे भारत की संविधान सभा के सदस्य रहे।
 - वे 35 वर्षों तक कैबिनेट मंत्री रहे—सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले मंत्री, जिन्होंने कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का संचालन किया।
 - खाद्य एवं कृषि मंत्री के रूप में उन्हें हरित क्रांति का श्रेय दिया जाता है और रक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने भारत को 1971 के ऐतिहासिक युद्ध में नेतृत्व दिया, जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश का जन्म हुआ।
 - उन्होंने 1979 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में भारत के उप प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया।

स्रोत: PIB

